P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-II* October-2015

# मानव मूल्यः एक चर्चा

**सारांश**

सार रूप में कहा जा सकता हैं कि मूल्यों का निर्धारण समाज में रहने वाले विवेक"ाील मानव जैसे प्राणी से संभव होता हैं। मनुष्य के विकास का सामान्य क्रम मूल्य के निर्धारण में सहायक होता हैं। किसी वस्तु में कभी–कभी स्वतः मूल्य पाया जाता है, कभी–कभी उसमें मूल्यों का निर्धारण होता है और कभी–कभी उसमें सन्निहित मूल्य को जागृत किया जाता हैं। मूल्य संबंधी विभिन्न विचारकों के विचारों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकलता हैं कि मूल्य उपयोगिता से संबंधित हैं। मनुष्य सारे मूल्यों का स्रोत और उपादान हैं। वह स्वयं उनका निर्माण करता है तथा वही उसके विघटन का कारण भी हैं। मूल्यों का समूचित प्रयोग उसकी महत्ता का प्रतिस्थापक हैं। संदर्भ के परिवर्तन के साथ ही साथ मूल्यों में भी परिवर्तन हो जाते हैं। मूल्यों का उद्‌भव एक–दो दिन में नही होता बल्कि एक लंबी प्रक्रिया से छनकर नवीन मूल्यों का अस्तित्व दृष्टिगत होता हैं। इस प्रकार मूल्यों के द्वारा जीवन को श्रेष्ठता प्राप्त होती हैं।

**मुख्य शब्द** : मानव, मूल्य, कीमत, मूल्यांकन।

**सतपाल**
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
बापोली, पानीपत, हरियाणा

**प्रस्तावना**

**मानव अर्थ एवं स्वरूप**

'मनुस्मृति' के रचयिता मनु भगवान की संतान ही मानव हैं। मानव की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत है। एक शाखा के अनुसार मानव की उत्पत्ति कमल के फूल से हुई। अनाशक्ति क लिए कमल की उपमा दी जाती हैं। इस आख्यान का तात्पर्य यह है कि मानव वह हैं, जो संसार रूपी वारि में कमल–पुष्प की तरह अनासक्त रहे।

दूसरी शाखा के अनुसार मानव की उत्पत्ति पार्थिव कमल से नही हुई, बल्कि उस अपार्थिव कमल से हुई, जिसका आरोहण भगवान विष्णु की नाभि से हुआ। इस आख्यान का आ"ाय यह है कि मानव वह है जो पृथ्वी पर अपार्थिव होकर रहे।

उपनिषदों में मानव के कर्म–पक्ष पर वि"ोष बल दिया गया है। क्योंकि कर्म"ाील मनुष्य ब्रह्म ज्ञानियों से भी श्रेष्ठ है।[1] इस समय तक वह वि"व की केन्द्रिय शक्ति बन गया था। उसका क्षेत्र केवल दृ"य जगत तक ही सीमित नही रहा। वह ब्रह्म तक भी पहुँच गया हैं।

महाभारतकार की दृष्टि में तो मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है– ''नहि मानुषाच्छेष्ठतरं हि किंचित।''[2] महाभारत तो मानव–चरित्र का महाकाव्य ही हैं। इसमें मानव द्वारा भोगे जाने वाले यथार्थ का विस्तारपूर्वक वि"लेषण किया गया हैं। यह जीवन–द"ार्न एक गहन आत्मिक आस्था से अभिप्रेरित है, जिसके द"ार्न पाण्डवों के सत्य धर्माचरण में होते है।

'श्रीमद', बाल्मीकीय रामायण' में भी मानव–चरित्र का वि"ाल भंड़ार परिलक्षित होता हैं। उसकी रामकथा के पात्र पग–पग पर अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के निमित्त तत्पर रहते हैं। व"िाष्ठ सदृ"ा ज्ञानी और नीतिवान गुरू, द"ारथ सदृ"ा बात का धनी कु"ाल राजा, राम सदृ"ा मर्यादा पुरूषोत्तम, सीता सदृ"ा आद"ार्ा पत्नी आदि अनेक पात्र मानवीय धरातल पर जीवन के विभिन्न आयामों को सासारिक रंगमंच पर अभिनीत करते हैं।

गीता में मनुष्य की आत्मा को नित्य माना गया है। भूत, वर्तमान एवं भविष्य में क्रम"ाः उसका अस्तित्व था, है एवं रहेगा।[3] शरीरधारी आत्मा की तीन विलक्षण अवस्थाएँ संसार में दृष्टिगत होती है– बाल्यावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था।

इस प्रकार मानव की उत्पत्ति भगवान से हुई है और उसके स्वरूप में ही मनुष्य का स्वरूप हैं। मानव ही ई"वर की श्रेष्ठतम उत्पत्ति हैं। वह ही विवेक सम्पन्न प्राणी हैं।

**मूल्यः अर्थ एवं स्वरूप**

प्राचीन काल से ही प्रत्येक दे"ा और समाज में जीवन जीने का एक नि"चत क्रम दृष्टिगोचर होता है, चाहे उसका स्वरूप कुछ भी रहा हो। जोवन का यह नि"चत क्रम ही मानव–मूल्य हैं।

'मूल्य' धातु में 'यत्' प्रत्यय के संयोग से नपुंसक लिंग संज्ञा शब्द 'मूल्य' निष्पन्न हुआ हैं, जिसके अनेक अर्थ हैं। यथा– वेतन, कीमत, दाम, पारिश्रमिक, उपयोगिता, वस्तु के बदले में दिया जाने वाला धन, जो मूल में हो आदि। वि"ोषण के रूप में 'मूल्य' शब्द का अर्थ है मोल लेने योग्य।[4]

तुलनात्मक दृष्टि से 'मूल्य' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'वैल्यू' शब्द का समानार्थक हैं। 'वैल्यू' शब्द लैटिन भाषा के शब्द (Value) शब्द से निष्क्रमित हैं, जिसका हिन्दी में अर्थ है– मूल्य, कीमत, सुन्दर, अच्छा आदि।[5] मूल्य शब्द का व्यवहार संज्ञा, क्रिया और वि"ोषण के रूप में होता हैं यथा–मूल्य, मूल्यांकन और मूल्यवान। 'बृहत् अंग्रेजी–हिन्दी को"ा' में वैल्यू का अर्थ मूल्यांकन करना, मूल्य निरूपण, मूल्य लगाना, मूल्य निर्णय करना आदि दिया गया हैं।[6]

'हिन्दी साहित्य को"ा' में मूल्य शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा गया है कि 'मूल्य' और प्रतिमान समानार्थी शब्द हैं, दोनों ही मानव निर्मित कसौटियाँ हैं जिनके सहारे साहित्य की परख की जाती हैं।[7] प्रतिमान का अर्थ हैं 'समान मानवाली, मुकाबले की दूसरी वस्तु, उदाहरण अथवा दृष्टांतादि; वह वस्तु या रचना जिसे आद"ार्ा मानकर उसके अनुरूप और वस्तुएं बनाई जाती हो।[8]

डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार, 'मूल्य' शब्द पदार्थ के आन्तरिक गुण का वाचक हैं, जिसके कारण लोक जीवन में उसका महत्व या मान्य होता हैं।[9]

डॉ0 धर्मबीर भारती के विचार में ''मानवीय मूल्य विराट मानव जीवन की अगणित ि"ाराओं से संचारित होता रहता हैं। जहां भी यह रक्त प्रवाह रूका, वही अंग पक्षाघात से आहत होकर सूख जाता हैं, बेकाम हो जाता है।[10]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता हैं कि 'मूल्य' वही है, जो मानव–जीवन के पूर्ण विकास में सहायक हो। मानव गौरव की प्रतिष्ठा का नाम ही मूल्य हैं।

**मानव–मूल्यः एक परिचय**

मूल्यों का मानव जीवन में वि"िाष्ट स्थान हैं। इनका कार्य व्यक्तियों को सामाजिक जीवन के लिए आद"ार्ा रूप में प्रस्तुत करना हैं। वस्तुतः मूल्य एक मानक हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति सामाजिक व्यवहार की श्रेष्ठता का अनुमान लगाता हैं। किसी वस्तु, व्यक्ति, विचार या संस्था से किसी व्यक्ति का कैसा संबंध है यह उसके मानव मूल्यों पर आधारित होता हैं।

मानव मूल्यों का संबंध मानव के आन्तरिक चिंतन एंव बाह्य व्यवहार से हैं। मानव को उसके पूर्ण असतित्व में स्वीकार करके ही मूल्यों की कल्पना संभव होती है। महाभारत में भी स्पष्ट कहा गया है कि सृष्टि में मानव ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, जिसकी प्रतिष्ठा तथा स्वतंत्रता की महत्ता सभी धर्मों, वि"वासों एवं विचारधाराओं में स्वीकृत हैं। वह दे"ा, काल, प्रवृत्ति, व्यक्तिगत सम्बन्धों, सूक्ष्म मनोभावों एवं संवेगों में अव्यवस्थित हैं। अनेक चिंतकों ने भी मानव को श्रेष्ठ कहा है, क्योंकि वह ज्ञान की प्राप्ति कर सकता हैं। अपने जीवन में मानव ज्ञाता, व्याख्याता एवं निर्णायक स्वयं हैं। अतः मूल्यों का सम्बन्ध मानव से ही हैं।

डॉ0 वार्ष्णेय के अनुसार, ''जो आपकों अच्छा नहीं लगता, वह व्यवहार, दूसरों के प्रति मत करो, कदम–कदम पर धर्म का पालन करो। अर्थात हम यह कभी नहीं चाहते कि हमारे सामने मां–बहन की इज्जत लूटी जाए, इसके लिए हमें भी दूसरों से वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। इसी विवेक की जागृति करना मानव–मूल्य हैं। मूल्यों, मानों प्रतिमानों एवं आद"ार्ा की चेतना मानव संस्कृति की वि"ोषता हैं। यह वि"ोषता ही मानव को अन्य प्राणियों से पृथक करती हैं। मानव और प"ा समाज में सबसे बड़ा भेद संस्कृति का है। संस्कृति मानव के उच्छृंखल व्यवहार पर नियंत्रण रखती हैं। मूल्यों को हमारे जीवन का समूहीकरण कहा जा सकता है और यह मूल्य ही आद"ार्ा बनकर हमारे मानसिक जीवन को प्रेरित करता हैं। मूल्य स्थापित हो जाने पर ही हम कह सकते हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित। इसके आधार पर दो वस्तुओं की उत्कृष्टता ओर निष्कृष्टता की तुलना कर सकते हैं।''[11]

**मानव–मूल्यः भारतीय दृष्टिकोण**

वि"व के सभी द"ार्नों में प्राचीनतम भारतीय द"ार्न हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय चिंतक ने वैयक्तिक तथा सामाजिक समस्याओं को लेकर ही चिंतन आरंभ किया तथा समयानुसार दे"ाकाल के संदर्भ में उन समस्याओं का समाधान ढूंढ़ा। उन सभी दा"ार्निकों क लिए समस्याए प्रारम्भिक रूप में अनुभूत समस्याएँ रही थी। जो भी द"ार्न वि"ोष विचारकों ने दिया वह उस अनुभावात्मक समस्या पर किए गए चिंतन मनन का ही परिणाम था। उदाहरण के लिए महात्मा बुद्ध का समग्र चिंतन चार आर्य सत्यों पर आधारित हैं जो जीवन की अवबोधित समस्याएँ हैं। इसी प्रकार श्रीमद्भगवद गीता का द"ार्न प्रवृति मार्ग की पुनः स्थापना हैं।

अतः उसके लिए रणभूमि की स्थूल परिस्थिति का चयन किया गया जहाँ प्रवृत्ति की प्रधानता हैं। यहीं से मूल्यों का आविर्भाव होता हैं।

'मूल्य' चूँकि व्यक्ति समाज एवं काल सापेक्ष हैं, अतः स्वाभाविक ही पा"चमी एवं पूर्वी विचारकों ने भिन्न–भिन्न रूप में मूल्यों को प्रतिपादित किया है। जहाँ पा"चमी दे"ाों में भोगवाद पर अधिक बल दिया हैं, वहाँ भारतीय विचारधारा में आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन के चरम एवं साध्य मूल्यों के रूप में अंगीकार किया गया हैं।

मूल्यों की भारतीय विचाराधारा का रूप हमें वेद संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृति ग्रन्थों, रामायण एवं महाभारत में मिलता हैं। इन ग्रन्थों में सदाचार, नैतिकता, आचरणगत पवित्रता, धर्माचरण, आत्मज्ञान एवं सत्य मूल्यों का निरूपण प्राप्त हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. मुंड़कोपनिषद्– 3/1/14।
2. महाभारत– शान्तिपर्व, 180/12।
3. श्रीमद्भगवदगीता– 2/12।

4. सं0 द्वारिका प्रसाद शर्मा– संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ (खण्ड़–4), पृ0सं0–934।
5. सं0 रामप्रसाद तिवारी– हिन्दी वि"व को"ा (खण्ड़–1), पृ0सं0–365।
6. सं0 हरदेव बाहरी– बृहत् अंग्रेजी हिन्दी को"ा, पृ0सं0–2070।
7. सं0 धीरेन्द्र वर्मा– हिन्दी साहित्य को"ा, पृ0सं0–659।
8. सं0 रामचन्द्र वर्मा– मानक हिन्दी को"ा, पृ0सं0–608।
9. डॉ0 नगेन्द्र– भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका, पृ0सं0–160।
10. धर्मवीर भारती– मानव मूल्य और साहित्य्, पृ0सं0–134।
11. डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय– परिप्रेक्ष्य और प्रतिक्रियाएं, पृ0सं0–131।